International Journal of Applied Research 2019; 5(11): 162-164

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(11): 162-164
www.allresearchjournal.com
Received: 18-09-2019
Accepted: 22-10-2019

सोनिया
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत।

Correspondence Author:
सोनिया
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत।

चार्वाक दर्शन की तत्त्वमीमांसा

सोनिया

प्रस्तावना

किसी भी दार्शनिक सम्प्रदाय के मुख्यतः तीन विवेच्य विषय होते हैं– 1. तत्त्वमीमांसा 2. ज्ञानमीमांसा 3. आचारमीमांसा। जहाँ तत्त्वमीमांसा में, सृष्टि में विद्यमान मूलभूत तत्त्वों का विवेचन किया जाता है, वहीं ज्ञानमीमांसा में ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान के साधन एवं ज्ञान के प्रामाण्य आदि विषयों का वर्णन किया जाता है और आचारमीमांसा मूलतः तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा पर ही आधारित होती है। इसमें मनुष्य की व्यवहार पद्धति का वर्णन किया जाता है। यद्यपि प्रत्येक दर्शन की अपनी अलग–अलग तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा एवं आचारमीमांसा होती है, परन्तु इनमें से किसी एक विषय को लेकर लोक में उस दर्शन की अधिक प्रसिद्धि हो जाती है। यथा– जहाँ सांख्य एवं वैशेषिक अपनी तत्त्वमीमांसा के कारण लोक में अधिक प्रसिद्ध हैं, वहीं न्याय दर्शन अपनी प्रमाणमीमांसा के कारण अधिक प्रसिद्ध है। प्रस्तुत सन्दर्भ में चार्वाक की तत्त्वमीमांसा विवेच्य है–

चार्वाक एक नास्तिक, भौतिकवादी एवं अत्यन्त व्यवहारवादी दर्शन है। यह दर्शन केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है–

प्रत्यक्षैकप्रमाणवादितया.....[1]
प्रत्यक्षमेकं चार्वाकाः[2]
मानं त्वक्षजमेव हि[3]

अतः संसार में केवल उन्हीं तत्त्वों की सत्ता को स्वीकार करता है जो प्रत्यक्षप्रमाणगम्य हैं कहा भी गया है– प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि[4] इस प्रकार चार्वाक के अनुसार संसार में केवल चार तत्त्वों की सत्ता है– पृथ्वी, जल, तेज और वायु।

तत्र पृथिव्यादीनि भूतानि चत्वारि तत्त्वानि[5]
पृथ्वी जलं तथा तेजो वायुर्भूतचतुष्टयम्[6]

क्योंकि इन चार तत्त्वों को ही संसार में प्रत्यक्ष प्रमाण से जाना जा सकता है। प्रत्यक्षगम्य न होने के कारण ही, चार्वाक आकाश को तत्त्व नहीं मानता। अन्यान्य दर्शनों में, जहाँ आकाश को तत्त्व के रूप में स्वीकार किया जाता है, वहाँ इसकी सत्ता अनुमान प्रमाण से सिद्ध की जाती है यथा– न्याय–वैशेषिक दर्शन परिशेषानुमान से आकाश की सत्ता को सिद्ध करता है।

शब्दगुणकमाकाशम्.....शब्दलिङ्गकत्वमस्य कथम्? परिशेषात्।[7]

1. जड़ात्मक एवं चेतनात्मक सृष्टि के मूल कारण के रूप में चार तत्त्व– संसार में दो तरह की सृष्टि दिखाई देती है– जड़ एवं चेतन, इस जड़ चेतनात्मक सृष्टि के मूल में कोई जड़ तत्त्व है अथ वा चेतन तत्त्व है अथ वा जड़ और चेतन दोनों तत्त्व हैं– इस विषय को लेकर भारतीय दर्शन परम्परा में

1 सर्वदर्शनसंग्रह, प्रथम अध्याय
2 मानसोल्लास 2/17/20
3 षड्दर्शनसमुच्चय कारिका–83
4 सांख्यकारिका, कारिका– 4
5 सर्वदर्शनसंग्रह, प्रथम अध्याय
6 षड्दर्शनसमुच्चय, कारिका–83
7 तर्कभाषा, सम्पादक डॉ. श्रीनिवासशास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ, 2016, पृ.– 212

मुख्यतः तीन प्रकार के मत प्रचलित हैं–1. जड़कारणतावाद 2. चेतनकारणतावाद 3. जड़चेतनकारणतावाद।

चार्वाक जड़कारणतावादी दर्शन है क्योंकि इसके अनुसार पृथ्वी, जल, तेज, और वायु इन चार जड़ तत्त्वों से ही शरीर, इन्द्रिय आदि जड़ पदार्थों की एवं शरीर में चैतन्य की उत्पत्ति होती है अर्थात् चार्वाक दर्शन जड़चेतनात्मक सृष्टि का मूल कारण चार जड़ तत्त्वों को ही मानता है।

पृथ्वी + जल + तेज + वायु – जड़ात्मक सृष्टि
पृथ्वी + जल + तेज + वायु– चेतनात्मक सृष्टि
आधारो भूमिरेतेषाम्[8]

शङ्का– चार्वाक का यह मत तो स्वीकार किया जा सकता है कि जड़ तत्त्वों से जड़ात्मक सृष्टि की उत्पत्ति होती है परन्तु जड़ तत्त्वों से चैतन्य की भी उत्पत्ति होती है यह मत स्वीकार्य नहीं है क्योंकि कहा भी गया है– कारणगुणा हि कार्यगुणानारभन्ते[9] अर्थात् कारण के धर्म ही कार्य में आते हैं यथा नीले तन्तुओं से नीला पट तो बन सकता है परन्तु नीले तन्तुओं से पीला पट नहीं बन सकता। अतः कारण के अनुरूप ही कार्य होता है।
चार्वाक दार्शनिक उपर्युक्त शङ्का का समाधान लौकिक उदाहरण के माध्यम से करते हैं–
तेभ्य एव देहाकारपरिणतेभ्यः किण्वादिभ्यः मदशक्तिवत् चैतन्यमुपजायते[10]
अर्थात् जिस प्रकार मदिरा के विभिन्न घटकों (किण्व, मधु आदि) में मदशक्ति नहीं होती, परन्तु जब इन घटकों का विशेष अनुपात में सम्मिश्रण किया जाता है, तो मदिरा में मदशक्ति उत्पन्न हो जाती है।
उसी प्रकार यद्यपि पृथ्वी, जल, तेज एवं वायु में चेतनता नहीं होती, परन्तु जब इनका विशेष अनुपात में सम्मिश्रण किया जाता है तो इन चार तत्त्वों से ही शरीर में चैतन्य की उत्पत्ति हो जाती है।
यद्यपि चार्वाक स्वयं वेदों में विश्वास नहीं करता परन्तु अपने मत की पुष्टि के लिए श्रुति प्रमाण देता है–
विज्ञानघन एवैतेभ्यो भूतेभ्यो समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति, स न प्रेत्य संज्ञास्तीति।[11]
अर्थात् (आत्मा) विज्ञान (शुद्ध चैतन्य) के रूप में इन भूतों से निकलकर, इन्हीं भूतों में विलीन हो जाता है और मृत्यु के बाद चैतन्य की सत्ता नहीं रहती।[12]
इससे स्पष्ट होता है कि चार जड़ भूत तत्वों से ही शरीर में चैतन्य की उत्पत्ति होती है।

2. आत्मा– चार्वाक आत्मा के रूप में किसी नित्य (सत्), चित्, आनन्द एवं शुद्ध स्वरूप सत्ता को स्वीकार नहीं करता। चार्वाक के अनुसार चैतन्य विशिष्ट शरीर ही आत्मा है। चार्वाक के आत्मविषयक इस मत को देहात्मवाद के नाम से भी जाना जाता है।

"तच्चैतन्यविशिष्टदेह एवात्मा"[13]

चार्वाक चैतन्य तथा शरीर के सम्बन्ध को निम्नलिखित आधारों पर सिद्ध करते हैं–[14]

1. शरीर के रहने पर चैतन्य का उदय होता है, शरीर के नष्ट होने पर चैतन्य भी नष्ट हो जाता है।
2. प्रत्येक मनुष्य को स्थूलोऽहम्, कृशोऽहम् का बोध होता है, स्थूलता और कृशता आदि का अनुभव चैतन्ययुक्त शरीर में ही होता है।
3. वर्षाकाल में दही में बहुत शीघ्र छोटे–छोटे कीड़े रेंगते हुए दिखाई पड़ते हैं अर्थात् दही जड़ है, उस जड़ दही में चेतन कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं, उसी प्रकार जड़ तत्वों से शरीर में चैतन्य की उत्पत्ति हो जाती है।

चैतन्य विशिष्ट देह को आत्मा मानने में चार्वाक की ज्ञानमीमांसीय मान्यता भी प्रमुख कारण है। चूँकि चार्वाक केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है और प्रत्यक्ष प्रमाण से केवल देह ही आत्मा सिद्ध होती है।

"देहातिरिक्ते आत्मनि प्रमाणाभावात्"[15]

यदि देह से भिन्न किसी पारलौकिक आत्मतत्त्व को स्वीकार किया जाए तो प्रत्यक्ष प्रमाण का विरोध होता है और प्रत्यक्ष विरोध किसी भी दर्शन को स्वीकार्य नहीं होगा।

3. ईश्वर– चार्वाक दर्शन को अनीश्वरवादी[16] दर्शन कहा जाता है किन्तु ऐसा कहना युक्तिसंगत नहीं होगा कि चार्वाक ईश्वर को नहीं मानता, हाँ इतना अवश्य कहा जा सकता है कि चार्वाक ईश्वर के रूप में किसी पारलौकिक सत्ता को स्वीकार नहीं करता।
चार्वाक के अनुसार लोकसिद्धो राजा परमेश्वरः[17] अर्थात् लोक में स्वीकृत राजा ही ईश्वर है।
प्रायः जो भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हैं उनका प्रमुख तर्क है कि सृष्टि की उत्पत्ति किसी सामर्थ्यशाली, सर्वव्यापक चेतन कर्ता के द्वारा की जा सकती है वह चेतनकर्ता ईश्वर ही हो सकता है, कोई सामान्य मनुष्य नहीं हो सकता ।

यथा– उदयन ने न्यायकुसुमाञ्जलि में 8 हेतुओं से ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। जिनमें से प्रमुख हेतु है– 'कार्यात्' अर्थात् सृष्टि एक कार्य है, जो भी कार्य होता है, उसका कोई चेतनकर्ता अवश्य होता है अतः सृष्टि का भी कोई चेतन कर्ता होना चाहिए, यह सामर्थ्यशाली चेतन कर्ता ईश्वर है।

कार्यायोजनधृत्यादेः पदात् प्रत्ययतः श्रुतेः
वाक्यात् संख्याविशेषाच्च साध्यो विश्वविदव्ययः।[18]

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीकार ने भी सृष्टि के निमित्तकारण के रूप में ईश्वर की सत्ता सिद्ध की है।

'संसारमहीरुहस्य' बीजाय निमित्तकारणाय'[19]

---

8 षड्दर्शनसमुच्चय, कारिका–83
9 तर्कभाषा, सम्पादक डॉ.– श्रीनिवासशास्त्री, साहित्य भण्डार, 2016, पृ.– 204
10 सर्वदर्शनसंग्रह, प्रथम अध्याय
11 बृहदारण्यकोपनिषद् 2/4/12
12 सर्वदर्शनसंग्रह, प्रथम अध्याय, सम्पादक– डॉ. उमाशंकरशर्मा ऋषि, पृ.–4
13 सर्वदर्शनसंग्रह, प्रथम अध्याय
14 भारतीय दर्शन की प्रमुख समस्याएँ, डॉ. महेश भारतीय, इण्डो विजन प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद, पृ.– 91
15 सर्वदर्शनसंग्रह, प्रथम अध्याय
16 भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, पृ.– 80
17 सर्वदर्शनसंग्रह, प्रथम अध्याय, पृ.– 8
18 न्यायकुसुमाञ्जलि 5/1
19 न्यायसिद्धान्तयुक्तावली, सम्पादक डॉ. धर्मेंद्रनाथ शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2017

इसके अतिरिक्त ब्रह्मसूत्रकार भी सृष्टि का कारण ईश्वर को मानते हैं– जन्माद्यस्य यतः[20]

परन्तु चार्वाक के अनुसार सृष्टि का कोई निमित्त कारण नहीं है, सृष्टि स्वभावतः ही होती है, जिस प्रकार अग्नि का स्वभाव उष्ण होता है, जल का स्वभाव शीतल होता है, उसी प्रकार चार जड़ भूतों का स्वभाव सृष्टि करना है इसके लिए किसी निमित्त ईश्वर की सत्ता मानना युक्त नहीं है।

इसके अतिरिक्त चार्वाक पारलौकिक सत्ता के रूप में स्वर्ग, नरक एवं मोक्ष को भी स्वीकार नहीं करता। उसके अनुसार यदि इनकी सत्ता है तो इहलौकिक है, पारलौकिक नहीं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि चार्वाक दर्शन तात्त्विक दृष्टि से बहुत्ववादी दर्शन है, जो संसार में पृथ्वी, जल, तेज और वायु नामक चार तत्त्वों की सत्ता स्वीकार करता है उसके अनुसार इन चार तत्त्वों से ही समस्त जड़चेतनात्मक सृष्टि होती है।

प्रायः इस दर्शन का अत्यधिक स्थूलतम होने के कारण विरोध किया जाता है, यहाँ तक कि इसे दर्शन ही स्वीकार नहीं किया जाता, परन्तु यह समझना अत्यन्त आवश्यक है कि सम्भवतः चार्वाक ही ऐसा दर्शन है जो लोकव्यवहार के सर्वाधिक निकट है।

सन्दर्भ

1. व्याख्याकार ऋषि, प्रो. उमाशंकर शर्मा. सर्वदर्शनसंग्रह. चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016.
2. सम्पादक– जैन, डॉ. महेन्द्रकुमार. षड्दर्शनसमुच्चय. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1997.
3. उपाध्याय, आचार्य बलदेव. भारतीय दर्शन. शारदा मन्दिर प्रकाशन, वाराणसी, 1972.
4. सिन्हा, प्रो. हरेन्द्र प्रसाद. भारतीय दर्शन की रूपरेखा. मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2016.
5. सम्पादक शास्त्री, डॉ. श्रीनिवास. तर्कभाषा. साहित्य भण्डार, मेरठ, 2016.
6. व्याख्याकार शास्त्री, डॉ. राकेश. सांख्यकारिका. संस्कृत ग्रंथागार, दिल्ली, 2017.
7. भारतीय, डॉ. महेश. भारतीय दर्शन की प्रमुख समस्याएँ. इण्डोविजन प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद, 1999.
8. व्याख्याकार शास्त्री, पं. जगदीशचन्द्र. न्यायकुसुमाञ्जलि. विद्यानिधि प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2011.
9. शर्मा, चन्द्रधर. भारतीय दर्शन और आलोचन और अनुशीलन. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2013.
10. सम्पादक– शास्त्री, डॉ. धर्मेन्द्रनाथ. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2017.

[20] ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्, व्याख्याकार आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि, चौखम्बा विद्याभवन, वराणसी, 1966, पृ.– 60